...मिट्टी को बना दिया 'सोना'

राजस्थान पत्रिका 10-1-2017

राजस्थान के पशुपालकों को मिलेगा फायदा

भेड़ की ऊन नहीं थी ज्यादा उपयोगी

अविकानगर संस्थान के वैज्ञानिकों ने अनुसंधान कर दिलाई पहचान

टोंक. प्रदेश में भेड़ की जिस ऊन को किसान बेकार समझकर फेंक दिया करते थे। अब उस ऊन से केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर के वैज्ञानिक विभिन्न प्रकार के उत्पाद तैयार कर रहे हैं। उत्पादों को देशभर में पसंद भी किया जा रहा है।

वैज्ञानिकों का कहना है कि राजस्थानी भेड़ की ऊन 30 प्रतिशत तक ही काम में ली जाती थी। इससे पशुपालकों का लाभ नहीं मिलता था। इस ऊन से अब तक रेनकोट ही बनाया जा रहा था। कई बार इसकी मोटी दरी भी बना ली जाती थी। इससे पशुपालकों को खास मुनाफा नहीं मिलता था। राजस्थानी भेड़ की इस मोटी ऊन का पूरा उपयोग करने की चुनौती संस्थान के वैज्ञानिकों ने ली।

पशुपालकों को देशी भेड़ की ऊन से अधिक मुनाफा दिलाने के लिए कई कार्य किए। इसमें काफी हद तक कामयाबी भी हासिल की है। अभी भी ऊन के रेशों पर अनुसंधान कर कई प्रकार के उत्पाद तैयार किए जा रहे हैं।

फोटो विण्डो...

1 टोंक जिले के केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर में ऊन से तैयार किए गए उत्पाद।

2 अनुसंधान संस्थान अविकानगर में तैयार की जा रही ऊन।

3 केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर में प्रशिक्षण ले रही महिलाएं।

कई उत्पाद कर रहे हैं तैयार

जम्मू-कश्मीर, हिमाचल व उत्तराखण्ड की भेड़ की ऊन ही उत्पाद तैयार के लिए बेहतर है। इसके चलते अन्य देशों से ऊन मंगवानी पड़ रही है। अब संस्थान अविकानगर ने राजस्थान की मोटी ऊन से कई तरह के उत्पाद तैयार करने शुरू कर दिए। इस ऊन का पश्मीना लोगों को खास तौर पर पसंद आ रहा है। इसके अलावा कम्बल, शर्ट, दरी, कालीन, टोपियां अन्य उत्पाद तैयार किए जा रहे हैं।

ऐसे बना रहे उत्पाद

प्रदेश की भेड़ की मोटी ऊन की सबसे पहले सफाई की जाती है। फिर मशीनों में धुलाई तथा कताई कर धागे तैयार किए जाते हैं। इसके बाद इन्हें बुनाई केन्द्र में भेजा जाता है। जहां इस कार्य से जुड़े लोग पुरानी पद्धति (हथकरघा) से लकड़ी तथा रस्सियों से कालीन तथा अन्य उत्पाद तैयार करते हैं। उच्च गुणवत्ता के कम्बलों के लिए विभिन्न ऊन के मिश्रण का निर्धारण कर कम्बल बनाए जा रहे हैं।

प्रशिक्षण भी दे रहे हैं

संस्थान के वैज्ञानिकों ने ऊन के रेशों की जांच कर उससे कई प्रकार के उत्पाद तैयार किए हैं। इतना ही नहीं वे अन्य संस्थानों तथा व्यवसाय से जुड़े लोगों को भी इस कार्य से जुड़ने के लिए प्रशिक्षण दे रहे हैं।

बढ़ेगा कारोबार

देश में एक बड़ा व्यवसाय कारपेट से जुड़ा है। करीब 10 हजार करोड़ रुपए का कारपेट विदेशों में निर्यात किया जाता है। रिचर्स से तैयार की गई ऊन व उत्पाद से ये कारोबार और बढ़ेगा।

डॉ. एस. एम. के. नकवी, निदेशक, केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर